

30/10/20

# HISTORY (H)

## B.A part-I paper-II

Page No-1  
 डॉ. रमेश कुमार  
 इन्स्टीट्यूट ऑफ़  
 R.D. G.R. College

उपरोक्त चालीस द्वितीय का जीवन एवं परिवार पर प्रकारा दलें।  
 उपरोक्त चालीस द्वितीय, चालीस प्रथम का पुत्र था। उसकी  
 माँ फ्रांस की राजकुमारी हेनरीएट मेरियर थी।  
 चालीस द्वितीय का जन्म 1630 ई में हुआ था।  
 अपने बाल्यकाल में उसे अनेक कठिनाइयों का  
 सामना करना पड़ा। उनीस वर्ष की आयु में  
 उसके पिता को मृत्यु-दण्ड दे दिया गया था।  
 उसे निरक्षर लेकर इंग्लैंड से आकर पड़ा था।  
 और फ्रांस एवं इंग्लैंड में निर्वासित जीवन व्यतीत  
 करना पड़ा। 30 वर्ष की आयु में वह इंग्लैंड  
 का राजा बन गया। चालीस द्वितीय अपने पितामह,  
 पिता एवं माँ के समान अत्यन्त दयालु थे।  
 वह एक हंसमुख, पिता रहित बच्चा था। चालीस  
 द्वितीय अपने अत्यन्त नाम विवाही लक्ष्मि थे।  
 उसके दरबार में अत्यन्त सुखा-चार व्याप्त था।  
 तथा योद्धाओं की सेवा एवं लोभ कैवलियों का  
 प्रभाव उसके दरबार पर था। हुआ था। उपरोक्त  
 अंग्रेजों के लोभ पर भी उसने अनेक उपाय  
 वह व्यवधान रखे एवं शिकार में रुचि रखी।  
 वह तथा राज-कार्य में अत्यन्त कुशल था।  
 चालीस ने लालिष को परवानों की प्रभाव तथा राजनीतिक  
 कुशलता था।

चालीस द्वितीय निम्न शासक बन गए। चालीस परन्तु अपने निर्वासन  
 काल की कठिनाइयों के अनुभव के प्रभाव वह द्वारा का जीवन व्यतीत  
 करना चाहता था तथा पुत्र गोदा पर जाना नहीं चाहता था।  
 वह संसद से सहायता नहीं करना चाहता था। परिस्थितियों को अपने विरुद्ध  
 लोभ दरबार वह संसद के समक्ष चुनने में अपना सम्मान नहीं समझता।  
 वह यह कारण है कि उसके लिए कहा जाता है कि उसका मन को  
 विवेक था, वह विवेक और नहीं समझता था। चालीस में अपने-आप को  
 दिया की अद्वयता प्रभाव थी। वह कैवलियों-धर्म का समर्थन था।  
 उसके मृत्यु के समय से पूर्व इस राज को कोई न जाना (काम) होता।  
 उसे उसके जीवन-प्रतिफल धर्म का अनुमान ही समझती थी।  
 रमेश्वर के अनुवाद सच नो यह है कि चालीस को कठिनाई के  
 धर्म पर विवेक नहीं। यह सच है कि राजा के लिए वह जीवन-प्रतिफल  
 समर्थन रखता था। समझता था। तथा मृत्युशय्या पर उसे धर्म की  
 कैवलियों को धर्म कर दिया था, किन्तु वास्तव में वह अद्वय था। उसे  
 किसी धर्म की इच्छा नहीं थी। वह कि उसके लिए वह राजा पर अत्याचार करना।

समाप्त